Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648 | Impact Factor - 7.139 | Indexed (SJIF)

05 Sept. 2021 Special Issue- 43 Vol. I

Literature, Culture and Media

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editor
Principal Dr. Kishan Pawar

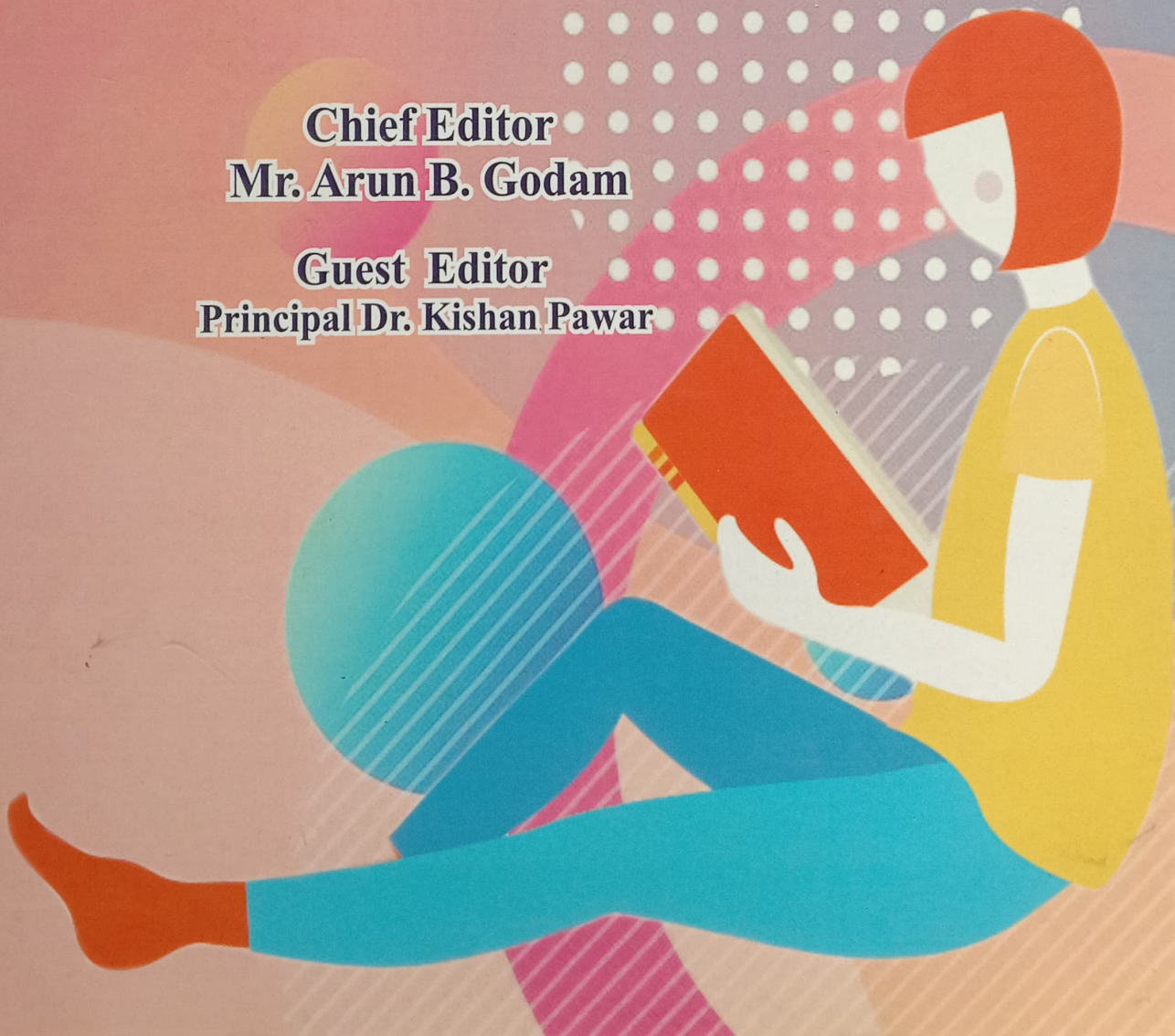

Special Issue 43, Vol. 1 Sept. 2021	Peer Reviewed SJIF	ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

Index

1. Role of Digital Media in the Study of Literature — 11
Mr.PradipGunderaoKolhe

2. Role of Digital Media in the Study of English Literature and Language — 14
Mr.Maske Gaurav Rambhau

3. An Analysis of Thomas Hardy's Novel 'Far From the Madding Crowd' — 17
Dr. Dwijendra Nath Burman

4. Rohinton Mistry's Novel *Such a Long Journey:* A Journey of Hope and Despair — 21
Dr Alka Bharatrao Deshmukh

5. Impact of Social Media on Libraries — 24
Dr. Sunil Ashurba Mutkule

6. Censorship and the Right to Free Speech and Expression With Special Reference to the Screen World — 28
Dr Manisha Dashrath Sasane

7. Caribbean Literature and Culture: An Overview — 32
Sanjay Bhagwat Salunke

8. Post-colonial Literature and It's Importantce — 36
Dr.Balasaheb S. Bhosale, Sanjay Bhagwat Salunke

9. हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति — 38
डॉ कुलकर्णी वनिता बाबूराव

10. मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में भारतीय संस्कृति का चित्रण — 41
प्रा. डॉ. देशपांडे आर.के.

11. भारतीय संस्कृति और हिंदी साहित्य — 43
डॉ गोविन्द पांडव

12. कोरोना काल की कविताई — 45
डॉ.निम्मी ए.ए

13. हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति — 48
प्रा. डॉ. म्हस्के एन.आर.

Late Ramesn Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue 43, Vol. 1 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Sept. 2021 | SJIF | Impact Factor : 7.139

हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति

डॉ कुलकर्णी वनिता बाबूराव
हिंदी विभागाध्यक्षा, कै.रमेश वरपुडकर महाविद्यालय, सोनपेठ. ता.सोनपेठ जि. परभणी, पिन कोड अरे 431516

प्रस्तावना —

हिंदी एक समर्थ व सक्षम भाषा है इसकी नागरी लिपी वैज्ञानिकता से परिपूर्ण है। इसके प्रयोग करतांओं की संख्या अरब से ऊपर तक पहुंँच चुकी है । विश्व स्तर पर इसकी पहचान है। हिंदी की शब्द संपदा पर्याप्त समृद्ध है। इसका सांस्कृतिक प्रवाह निरंतर गतिमान है। इस भाषा में प्राचीन व आधुनिक विचारों के संवाद संवाहक की अद्भुत क्षमता है। हिंदी एक संस्कृतिवान भाषा है। हिंदी एक सभ्य समाज की भाषा है और हिंदी एक संस्कार की भाषा है। हिंदी एक श्रेष्ठ भाषा और एक महान संस्कार देने वाली भाषा संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा भारत की राष्ट्रभाषा, पूरे भारतीय समाज की संपर्क भाषा या भविष्य की विश्व भाषा के रूप में प्रतिष्ठित भाषा है संस्कृति, समाज और संस्कार की भाषा है।

हमारे सामने तीन आयाम आदर्श रूप में है- अनिवार्य रूप में संस्कृति, शब्द रूप में संविधान और महामानव के रूप में महात्मा गांधी। तीनों ही इस देश की राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को स्थापित करने का आग्रह करते हैं। भाषा एक व्यक्ति और राष्ट्र की आत्माभिव्यक्ति का साधन होती है। भाषा की अनिवार्यता जीवन और संस्कृति दोनों के लिए है,उसी तरह देश, भारत देश की आत्माभिव्यक्ति के लिए हिंदी का राष्ट्रभाषा होना आवश्यक है, क्योंकि यह भारत के माटी पुत्रों की भाषा है। भारतीय संस्कृति में जिन उदार तत्वों का समावेश है उनमें तत्वज्ञान के वह मूल सिद्धांत रखे गए हैं, जिनको जीवन में ढालने से आदमी सच्चे अर्थों में "मनुष्य" बन सकता है। भारतीय संस्कृति मनुष्य मात्र को क्या, संसार के प्राणी मात्र और अखिल ब्रह्मांड तक को भगवान का विराट रूप रूप मानता है। भगवान इस विराट में आत्म- रूप होकर प्रतिष्ठित है। और विश्व के समस्त जीव जंतु प्राणी स्थावर जंगम उसमें फिर है।

संस्कृति शब्द का अर्थ —

संस्कृति शब्द का अर्थ है सफाई, स्वच्छता शुद्धी या सुधार । जो व्यक्ति सही अर्थों में शुद्ध है, जिसका जीवन परिष्कृत है, जिसके रहन-सहन में कोई दोष नहीं है , जिसका आचार- व्यवहार शुद्ध है ,वही सभ्य और सुसंस्कृत कहा जाएगा।

"सम्यक करण संस्कृति"- प्रकृति की दी हुई भद्दी, मोटी, कुदरती चीज को सुंदर बनना संभाल कर रखना अधिक उपयोगी और श्रेष्ठ बनाना उसकी संस्कृति है। जब हम भारतीय या हिंदू संस्कृति शब्दों का प्रयोग करते हैं तो हमारा तात्पर्य उन मूलभूत विचारों से होता है जिन पर आचरण करने से मानव जीवन में अच्छे संस्कार उत्पन्न हो सकते हैं। और जीवन शुद्ध परिष्कृत बन सकता है।1 हम देखते हैं कि प्रकृति में पाई जाने वाली वस्तु प्राय: साफ नहीं होती। बहुमूल्य हीरे मोती मानिक आदि सभी को शुद्ध करना पड़ता है। कटाई और सफाई से उनका सौंदर्य और निखर उठता है, और कीमत बढ़ जाती है। इसी प्रकार सुसंस्कृत होने से मानव का अंतर और बाह्य जीवन सुंदर और सुखी बन जाता है। संस्कृति व्यक्ति समाज और देश के लिए अधिक उपयोगी होती है। संस्कृति जितना अधिक फैलती है, जितना ही उसका दायरा बढ़ता जाता है, उतना ही मानव स्वर्ग के स्थाई सौंदर्य सुख के समीप आता जाता है। सुसंस्कृत मनुष्यों के समाज में भी अक्षय सुख- शांति का आनंद लिया जा सकता है ।हमारे देश का कल्याण तभी हो सकता है, जब हम हृदय से अपनी संस्कृति को समझेंगे और उसका पालन करेंगे।

संस्कृति की व्याख्या—

किसी भी देश की आध्यात्मिक सामाजिक और मानसिक विभूति की प्रेरक शक्ति को संस्कृति कहा जाता है ।संस्कृति का संबंध संस्कार से है जिस का सामान्य अर्थ परिष्कार करना है। संसार में जो भी सर्वोत्तम बातें जाने या कहीं जा गई है उनसे अपने आप को परिचित करना संस्कृति है। वह आचार- विचारों की शुद्धि है। संस्कृति की अनेक परिभाषाएं हैं उसकी एक परिभाषा है "मानसिक प्रयास सौंदर्य और मानवता की अनुभूति" 2

संस्कृति व्यक्ति के आचार- विचारों में प्रभावित होती है ।लेकिन जातीय संस्कारों को ही संस्कृति कहते हैं। वह एक समूहवाचक शब्द है। "वास्तव में संस्कृति जीवन की एक शैली है वह सारे जीवन में व्याप्त होती है। उसकी रचना और विकास में अनेक सदियां लग जाती है।3 संस्कृति की अनेक प्रकार से व्याख्या की गई है -

(1) एक संस्कृति मानवता की खोज है।

(2) संस्कृति कलात्मक प्रयास है।
(3) संस्कृति प्रेरणादाई और रचनात्मक मूल्यों का संरक्षण है।
(4) संस्कृति साहित्य भाषा और संस्थाओं की नियामक शक्ति है।

हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति —

हिंदी अमीर खुसरो (सन 1953) से लेकर आज तक साहित्य और सांस्कृतिक नवजागरण की भाषा रही है। यह संतों- फकीरों- मजदूरों- किसानों की भाषा रही रही है। इसने भक्तिकाल में पूरे देश को एकसूत्र में बांधकर भारत राष्ट्र को भावनात्मक और सांस्कृतिक रूप से सुगठित और समृद्ध किया। यह राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती जैसे समाज सुधारकों की भाषा रही है। यह नानक, कबीर, तुलसी, सूर, मीरा जायसी की भाषा तो है ही, सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज की भाषा भी हिंदुस्तानी हिंदी थी। विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर भारतीय भाषाओं और राष्ट्रभाषा हिंदी के अंतर संबंधों को आलोकित करते हुए कहते हैं - "आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल के समान है जिसका एक -एक दल प्रांतीय भाषा और उसकी साहित्य संस्कृति है । किसी एक के मिटा देने से उस कमल की शोभा नष्ट हो जाएगी । हम चाहते हैं कि भारत की सब प्रांतीय बोलियांॅ जिनमें सुंदर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने अपने घर में रानी बन कर रहे। प्रांत के जनगण की हार्दिक चिंता की प्रकाश भूमि स्वरूप कविता की भाषा होकर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार के मध्य -मनणि हिंदी भारत भारती होकर विराजित रहे।"4 इस प्रकार से अरविंद घोष हिंदी प्रचार को स्वाधीनता आंदोलन का हिस्सा मानते थे । बंकिमच और ईश्वरचंद् विद्यासागर केशवचंद्र सेन भी हिंदी के समर्थक थे । " हिंदी भाषा की प्रकृति परिवेश इतना विस्तीर्ण हो गया है कि वियतनाम में गोली चलती है तो हताहत प्राणियों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए हिंदी जगत में कवि गोष्ठियांॅ गोष्टी या आयोजित होती है तथा काव्य संकलन निकल जाते हैं ।"5 कहने का तात्पर्य यह है कि आज हिंदी एक वैज्ञानिक समर्थ भाषा है, आधुनिक तकनीकों से इसका कदमताल मिल रहा है, और कंप्यूटर के निकष पर यह खरी सिद्ध हो चुकी है। इसमें संस्कृति की एक वेगवती धारा भी बहती है, जो मानव मनों को जोड़ने में समर्थ है। रामधारी सिंह दिनकर कहते हैं कि, सांस्कृतिक गुलामी का सबसे भयानक रूप वह होता है, जब कोई जाति अपनी भाषा को छोड़कर दूसरों की भाषा को अपना लेती है और उसी में तुतलाने में अपना परम गौरव मानने लगती है। 6

डॉ रामविलास शर्मा ने भक्ति आंदोलन को जनता का सांस्कृतिक आंदोलन माना है। यह अवधारणा सर्वथा सटीक जान पड़ती है। क्यों कि, भक्ति के महासागर में अनेक चिंतन सरणियाँ, अनेक उपासक- विधियांॅ अनेक जातियांॅ, अनेक संप्रदाय सहज भाव से घुलते मिलते दिखाई देते हैं। एक अलग तरह की संस्कृति जन्म लेती दिखाई देती है, जो अधिक व्यापक अधिक उदार, अधिक मानवीय है। यह लगभग मान्यता है कि, " भक्ति दाविड़ उपजी " अर्थात दक्षिण भारत में इसका जन्म हुआ लेकिन, भक्ति 'आंदोलन' और संस्कृति के रूप में उत्तर भारत में विशेष रूप से पुष्पित- पल्लवित हुई। डॉ रमेश कुंतल मेघ का यह कथन निर्भांत है," कि हिंदू- इस्लामी जीवन शैलियों के मिलाप और सर्वधर्म सद्भाव की पहली निव गुरुनानक और कबीर द्वारा रखी गई थी।" 7 "लोकमंगल" भक्ति आंदोलन की केंद्रीय धुरी है, और प्राय: सभी भक्त संत कवि अपने- अपने चिंतन और कविकर्म के माध्यम से न केवल लोक की हित चिंता में लीन थे, अपितु एक विराट उदार मनुष्यता की पक्षधर संस्कृति को भी पुस्ट कर रहे थे।

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएं हैं: आध्यात्मिकता, धर्मप्रधानता, समन्वयशिलता, प्राचीनता मूलभूत एकता, सर्वकल्याणकारी, सर्वांगिनता धार्मिक सहिष्णुता। भारत में अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं और यह एकता भूगोल, राजनीति, संस्कृति, धर्म, समाज ,भाषा ,साहित्य ,कला सभी क्षेत्रों में दिखाई देती है। नवीन भारत यदि संसार को कुछ दे सकता है तो वह सांस्कृतिक देय ही है ।धर्म, शिक्षा, न्याय, सभ्यता विज्ञान, कला आदि मानव जीवन की आवश्यक प्रवृत्तियों की जन्मभूमि यह भारत भूमि है। पशु को मनुष्य बनाने वाली जिसे सभ्यता और संस्कृति का उद्भव यहां हुआ वह किसी देश जाति धर्म संप्रदाय वर्ग या समाज के लिए नहीं वरना समस्त संसार के लिए है। भारतीय सभ्यता मानवता कि समस्त मनुष्य जाति की अत्यंत ही विवेक एवं दूरदर्शिता से भरी हुई जीवन पद्धति है। अपने स्वार्थ, सुख- साधना धन संपदा संग्रह ऐश आराम को लात मारकर अपनी आत्मा का कल्याण करने के निमित्त लोक सेवा और परमार्थ में जीवन व्यतीत करने में यहांॅ के लोग अपने जीवन की सफलता मानते रहे हैं। गौतम बुद्ध अपने राजपाट और सुख सौभाग्य को छोड़कर हिंसा और अज्ञान में डूबे हुए संसार को दया और आत्म ज्ञान की शिक्षा देने के लिए निकल पड़े। नारद जी कुछ घड़ी भी एक स्थान पर न ठहर कर नोट हर कर आत्म- ज्ञान का प्रसार करने के लिए हर घड़ी पर्यटन करते रहते थे। व्यास जी ने संसार को धर्म ज्ञान देने के लिए 'अष्टादश पुराना' की रचना की आदि कवि वाल्मीकि ने रामायण की रचना करके मानव जाति को कर्तव्य पथ पर चलने के लिए अग्रसर किया। "चरक सुश्रुत बाणभट्ट धनवंतरी प्रभृति

Special Issue 43, Vol. 1 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Sept. 2021 | SJIF | Impact Factor : 7.139

ऋषियों ने जीवन भर जड़ी बूटियों ,धातुओं, विषो आदि का अन्वेषण करके रोगग्रस्त पीड़ितों का त्राण करने के लिए सर्वांग- पूर्ण चिकित्सा का आविर्भाव किया।"8 सारांश —

हिंदी आज संसार की समुन्नत भाषा है। वैदिक रूचांओं में कहा गया है-" सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा" अर्थात संस्कार की प्रथम संस्कृति के संवाहक वेदो उपनिषद है । वैदिक साहित्य से संस्कृति की पुण्य मंदाकिनी लौकिक संस्कृत साहित्य में एवं संस्कृत से संस्कृति हिंदी में आई जो उसकी अमरता की सूचक है। संस्कृति का अभिप्राय है परिष्कार करना संस्कारों को विकसित करने वाली संस्कृति कहलाती है। भारतीय संस्कृति कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है, जिसकी महनीय विशेषता है 'अनेकता में एकता' इसके साथ ही विश्व कल्याण की भावना तथा समन्वय की प्रवृत्ति भारतीय संस्कृति की अन्य विशेषता है। भारतीय संस्कृति को हिंदी ने पूर्णतया आत्मसात कर लिया। आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक संस्कृति के तत्व हिंदी साहित्य में पूर्णतया सुरक्षित हैं। भाषा भी उतनी ही प्राचीन है जितना कि मनुष्य का बनाया हुआ शिल्प तथा काव्य । साहित्य संस्कृति का मूल स्वर है और संस्कृति साहित्य की उन्नायिका है। साहित्य के अभाव में संस्कृति गूंगी तथा संस्कृति के अभाव में साहित्य अंधा है। सभ्यता बाहरी आडंम्बरों से एवं संस्कृति ह्रदय से संबंधित है जो भीतरी भित्ति पर अंकित है ,उसकी आस्था की एक जीती जागती प्रतिमा है। हिंदी की अमरता का कारण इसमें सांस्कृतिक तत्वों का होना है। भारतीय संस्कृति में यह उच्च भावना रही है कि अपना सर्वस्व त्याग कर भी दूसरों को सुखी बनाया जाए। इस संस्कृति का स्वरूप सदा से ही जागृत है और इसनें विश्व शांति की भावना को अपनाया है।

संदर्भ —

(1)भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व- पं.श्रीराम शर्मा -आचार्य वांग्मय 34 - पृष्ठ 1. 5

(2) दो आजादी के पचास साल - भाग 2 - विश्व प्रकाश गुप्त, मोहिनी गुप्त - पृष्ठ 79

(3) Cultural Sociology - J. L. Gillen and
J. P. Gillen-1954, P- 139

(4) मधुमति- जुलाई-अगस्त 2018 संयुक्तांक -वैश्विक हिंदी विशेषांक- पृष्ठ- 125

(5) विश्व पटल पर हिंदी- सूर्य प्रसाद दीक्षित- लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद- प्रथम संस्करण 2013 इ- पृष्ठ -15

(6) संस्कृति भाषा और राष्ट्र - रामधारीसिंह दिनकर- लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद -प्रथम संस्करण 2008 - पृष्ठ - 211

(7)साहित्य सिलसिला- जुलाई, सितंबर 2009-
पृष्ठ 44

(8) भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व- पं. श्रीराम शर्मा - आचार्य वांग्मय 34- पृष्ठ -5.4

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani